I am happy that you have allowed Dr. Ram Manohar Lohia to speak, but I want to know why I should not continue.

Mr. Speaker: The hon. Member has done it already.

Shri Nath Pai: Now, I would frame my question.

Mr. Speaker: He has already said what he wanted to say.

Shri Nath Pai: The hon. Home Minister is here . . .

Mr. Speaker: I am not allowing any Minister to answer any of these things that have been asked in this manner.

Shri Nath Pai: I would never say that you are unfair, but I think that this will be rather . . .

Mr. Speaker: This is as good as saying that.

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं कहना चाहता हूं . . . .

अध्यक्ष महोदय : आप इस तरह से नहीं कह सकते हैं ।

श्री रामेश्वरानन्द (करनाल) : उनकी बात को तो सुन लीजिये ।

डा० राम मनोहर लोहिया: आपने मेरे प्रति कोई पक्षपात नहीं दिखाया है । मैं अपनी बात भी नहीं कह पाया हूं ।

अध्यक्ष महोदय : पक्षपात तो मुझे मि० नाथ पाई ने कहा है कि मैंने आपको इजाज़त दे कर दिखाया है । उनको इजाज़त नहीं दी है . . .

डा० राम मनोहर लोहिया: अपनी बात मैं नहीं कह पाया हूं ।

अध्यक्ष महोदय : जब बाहर जायेंगे तब आपस में फैसला कर लीजियेगा कि पक्षपात दिखाया या नहीं दिखाया ।

12.24 hrs.

BUSINESS OF THE HOUSE

The Minister of Parliamentary Affairs (Shri Satya Narayan Sinha): With your permission, Sir, I rise to announce that Government business in this House during the week commencing 2nd March, 1964 will consist of:—

(i) Consideration of any item of business carried over from today's Order Paper,

(ii) Discussion on the food situation on a motion to be moved by the Minister of Food and Agriculture,

(iii) General discussion on the General Budget for 1964-65.

Shri Nath Pai (Rajapur): I am very sorry that you got the impression that I even remotely intended to insinuate that you were showing partiality. I do not know if my hon. friend Dr. Ram Manohar Lohia also got that impression. All I say now is that since the matter has been willy-nilly, perhaps without your permission, raised, it is better to have a clarification and end it. That was what I said, and it was in that context that I said that since it had been allowed, I might continue. I never suggested or even remotely or indirectly or by implication or covertly cast any aspersions on your impartiality. I hope you will accept this. All I said was that it was better to have the matter clarified since the hon. Home Minister was also present here in the House.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshingabad): With regard to the business of the House, by way of clarification and by way of a gentle reminder to the Minister, may I request again that the Reports of the various Ministries must come before the House at least a week, if not earlier, before the Ministries' Demands are taken up in the House? Secondly, the schedule for the discussion of the Ministries'

[Shri Hari Vishnu Kamath]

Demands for Grants must also be finalised. We have not got the sequence of it so far, nothing at all. I hope this will be taken in hand very very soon.

Mr. Speaker: The Minister has promised that he will take steps.

श्री बागड़ी (हिसार) : अमन, चैन व्यवस्था और कानून के बारे में जो मसला उठाया गया था, वह बहुत जरूरी मसला था । इंसान जिन्दा जलाये जाते हैं, कत्लेआम होता है । इंसान से जिन्दगी की कोई कीमत ही नहीं रह गई है देश में । मैं अर्ज करूंगा कि इस पर वाकायदा तौर पर चर्चा इस हफ्ते होनी चाहिये ।

अध्यक्ष महोदय : चूंकि बार बार इसको उठाया जा रहा है, मैं मेम्बर साहिबान से चाहता हूं कि वे इस बात पर गौर करें कि आया कोई आर्डर रह सकेगा अगर यह हो कि यहां हर एक जो मेम्बर है वह खड़ा हो कर अपने आप सवाल उठाना शुरू कर दे और मैं कहता हूं कि उस तरह से न किया जाये? जो भी सवाल उठाया जाने वाला हो, उसकी मुझे पहले इत्तिला दी जानी चाहिये जब मुझ पता न हो और ऐसे ही किसी सवाल को उठा दिया जाये तो ऐसे कैसे काम चलेगा । एक दिन आगे भी कनफ्यूशन हुआ था । बात कुछ पूछी जा रही थी मैंने कुछ और ही जवाब दे दिया क्योंकि मेरे पास न तो नोटिस था और न ही मुझे इत्तिला दी गई थी ।

श्री किशन पटनायक: (सम्बलपुर): इसका तो नोटिस है ।

अध्यक्ष महोदय : जब नोटिस दिया जाता है और उसका जवाब दे दिया जाता है तो जिस किसी को शिकायत हो वह मुझे लिख सकता है या मेरे पास आ सकता है । इस तरह से मैं इजाजत नहीं दे सकता हूं ।

श्री किशन पटनायक : लिखा भी जाता है . . .

अध्यक्ष महोदय : जब लिख दिया जाता है और उसका जवाब आ जाता है तो उसको इस तरह से उठाया नहीं जा सकता है । इस तरह से किसी सवाल को उठाने की मैं बिल्कुल इजाजत नहीं दे सकता हूं हाउस के मेम्बर साहिबान की मैं इस मामले में मिलवर्तन चाहता हूं । बिना उसके कभी आर्डर नहीं रह सकेगा । अगर इस तरह से काम चलेगा, जिसकी मर्जी आए वह उठे, जिस वक्त चाहे और जब जी चाहे बोलना शुरू कर दे, तो

श्री बागड़ी : मैं पूछ कर उठा था ।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य श्री नाथ पाई ने अभी मुझे यकीन दिलाया है कि उनका कोई इरादा नहीं था और मैंने उसको बिल्कुल एक्सेप्ट किया और मुझे कभी खयाल नहीं हो सकता है कि मि० नाथ पाई ऐसा करेंगे । लेकिन इस तरह से कार्रवाई नहीं चल सकेगी अगर हर एक मेम्बर इस तरह से उठ कर बोलना शुरू कर देगा । बार बार मैंने दरख्वास्त की है, अपील की है, मिलवर्तन मांगी है लेकिन फिर भी क्यों मेम्बर साहिबान बार बार जिद करके चलते हैं, मेरी समझ में नहीं आता है । इस में मैं सभी मेम्बर साहिबान की कोआप्रेशन चाहता हूं । जितना भी समय मैं रीजनेबल समझूं हर एक डिसकशन पर मैं देने के लिए तैयार हूं और मैं दे रहा हूं लेकिन जो कायदा है जो कानून है, उसके मुताबिक ही चला जाये, ऐसे नहीं ।

12.27 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS—RAILWAYS (*Contd.*)

Mr. Speaker: Further discussion and voting on the remaining Demands for Grants in respect of the Budget (Railways) for 1964-65, together with the cut motions moved.